अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

नवजागरण के अग्रदूत और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

– जोनटि दुवरा
स्हा. अध्यापक एवं विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग
गोलाघाट कॉमर्स कॉलेज, ज्योति नगर
गोलाघाट (असम) – 785621

उन्नीसवी शताब्दी में भारत में अनेक प्रतिभाओं ने जन्म लिया, जिन्होंने अपने लेखन से भारतीय समाज, धर्म, राजनीति और साहित्य को नई दिशा दी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र उनमें से एक थे, जिन्होंने अपनी लेखन क्षमता से साहित्य से लेकर सामाजिक विद्रुपता, राजनीतिक भ्रष्टाचार, अंधविश्वास आदि पर अपने विचारों को प्रकट कर एक सही दिशा प्रदान की और हिन्दी साहित्य को नवीन भंगिमा और नया कलेवर प्रदान किया। इन्होंने हिन्दी भाषा को नवीनतम विषयों की ओर उन्मुख करने के साथ–साथ हिन्दी गदा को नतुन संस्कारों से संस्कारित किया। अपने समाज और देश के प्रति उत्तरदायित्व का इन्हें स्पष्ट बौध था। भारतेन्दु हिन्दी में आधुनिकरता के पहले रचनाकार थे। इनका कार्यकाल युग की संधि पर खड़ा है। इन्होंने रीतिकाल की सामंती संस्कृति की पोषक वृत्तियों को छोड़कर स्वस्थ परंपरा की भूमि अपनाई और नवीनता के बीज बोए। साहित्यिक क्षेत्र में इन्होंने सुधारात्मक कदम उठाये। खड़ी बोली को गद्य की भाषा बनाना, हिन्दी के विविध विधाओं का आगाज होना, परंपरा से चली आ रही रंगमंचीय गतिविधि पर परिवर्तन कर वंश, वाणी, अभिनय के स्वरुप और गीतों के स्वाभाविक प्रयोग आदि पर बल देना। भारतेन्द्र जी के समय में भारत पूरी तरह से अंग्रजी शासन की गिरफ्त में आ चुका था। अंग्रेजों के दमनचक्र से भारत कराह उठा था। इतना ही नहीं भाषा के स्तर पर भी अंग्रेजी का कारवां बढ़ने लगा था, इस स्थिति में भारतेन्द्र ने गद्य की भाषा के साथ–साथ लोगों के लिए भी एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की जो सबके लिए सर्वसुलभ हो, जिस भाषा में अपनापन का एहसास हो, वह थी 'खड़ीबोली'।

वे 'भारत दुर्दशा' नाटक में लिखते हैं –

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को शूल।''

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

भारतेन्दु जी ने पत्र–पत्रिकाओं में साहित्यिक श्रीवृद्धि करने वाली विषय–सामग्री साथ–साथ देश और समाज के हित से संबंधित मुद्दों को प्रमुखता से छापा। इनके द्वारा तीन पत्रिकाओं का संपादन किया गया – 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र–मैगजीन', 'बालबोधिनी।' इन पत्रिकाओं का दायरा काफी व्यापक था। भारतेन्द्र प्रचलित रुढ़ियों और आड़म्बरों से भारतीयों को मुक्त होने की सीख दे रहे थे तथा भारत को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से सशक्त बनाने के लिए प्रयत्नशील थे।

विदेशी शासन के आर्थिक शोषण से देश की आर्थिक दशा जर्जर हो रही थी। राजनीतिक जागृति के अभाव से भारतीय किंकर्तव्यविमूढ़ थे। भारतेन्दु जी के ऐसे समय में देशोद्धार का संकल्प लिया। इन्होंने जनता को भारत के पतन के कारणों से अवगत कराया तथा भारत के उत्थान हेतु कार्य करने को प्रेरित किया। भारतेन्द्र के समय साहित्य रीतिकालीन शृंगारिकता की चमक–दमक में बेसुध हुआ जा रहा था, जबकि राष्ट्र की शक्ति निरंतर श्रीण होती जा रही थी। साहित्य न समाज की आवश्यकता समझ रहा था और न समाज–साहित्य की। साहित्यकार नारी की कजरारी चितवन के शब्द चित्रांकन और कटिप्रदेश को मापने में ही अपनी लेखनी की उपयोगिता समझ रहे थे। उनको न समाज का पतन दिख रहा था, न ही राष्ट्र का शोषण।

ऐसे समय में भारतेन्दु ने साहित्य को सही मार्ग दिखाया। इन्होंने रीतिकालीन शृंगारिकता से एकदम से नाता तोड़ना उचित नहीं समझा, वह धीरे–धीरे साहित्य को शृंगारिकता के भंवरजाल से निकालकर राष्ट्रीयता के स्वच्छ समुद्र में लाये। उनकी रचनाओं में शृंगारिक्ता और राष्ट्रीयता दोनों परस्पर गुंथे प्रतीत होते हैं, किन्तु गहराई से देखने पर स्पष्ट होगा कि भारतेन्दु धीरे–धीरे शृंगारिकता से राष्ट्रवादिता की ओर उन्मुख होते जाते हैं, जिनकी गतिशीलता बहुत धीमी थी, परंतु रचनाएँ इसका स्पष्ट प्रमाण हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में –"एक और तो उनकी लेखनी से शृंगार रस के ऐसे रसपूर्ण और मर्मस्पर्शी कवित्त–सबैया निकलते थे जो उनके जीवन काल में इधर–उधर लोगों के मुंह से सुनाई पढ़ते लगे थे और दुसरी और स्वदेश –प्रेम से भरे हुए उनके लेख और कविताएँ चारों ओर देश में मंगल का मंत्र सा फूंकती थी।'' भारतेन्द्र जी के निबंध शीर्षक 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो? से पता चलता है कि भारत की उन्नति के लिए वह जीवनपर्यन्त चिन्तित ही नहीं रहेय बल्कि इसके निमित्त निरंतर कार्य भी करते रहे। यह निबंध दिसम्बर 1884 ई. में बलिया के ददरी–मेले के अवसर पर आर्य देशोपकारणी सभा में भाषण देने के लिए तैयार किया

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

गया था। इसमें लेखक ने भारतीयों के विकास के लिए बाधित तत्वों, कुरीतियों और अंधविश्वासों को त्यागकर अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त करने, उद्योग धंधो को विकसित करने, सहयोग एवं एकता पर बल देने तथा सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा दी है। नाटककार के रुप में भारतेन्दु की ख्याति जीवनकाल में ही हो गई थी। इन्होंने मौलिक और अनूदित नाटकों की रचना की। भारतेन्द्र ने नाटकों में जो विषय उठाया वे पूर्णतया नवीन थे। पुरातन परंपरा का आधार ग्रहण कर इन्होंने नए युग का मुहावरा गढ़ा। इस दृष्टि से उनको आधुनिक नाटकों का आदि सूत्रधार कहा जा सकता है। लेख और कविताएँ चारों ओर देश में मंगल का मंत्र सा फूंकती थी। भारतेन्दुजी के निबंध शीर्षक 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो? से पता चलता है कि भारत की उन्नति के लिए वह जीवनपर्यत्न चिन्तित ही नहीं रहेय बल्कि इसके निमित्त निरन्तर कार्य भी करते रहे। यह निबंध दिसम्बर 1884 ई में बलिया के ददरी मेले के अवसर पर आर्य देशोपकारणी सभा में भाषण देने के लिए बाधित तत्वों कुरीतियों और अंधविश्वासों को त्यागकर अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त करने, उद्योग धंधों को विकसित करने, सहयोग एवं एकता पर बल देने तथा सभी क्षेत्रों में आत्म–निर्भर होने की प्रेरणा ही है।

नाटककार के रूप में भारतेन्दु की ख्याति जीवनकान में ही हो गई थी। इन्होंने मौलिक और अनूदित नाटकों की रचना की। भारतेन्दु ने नाटकों में जो विषय उठाया वे पूर्णतया नवीन थे। पुरातन पंरपरा का आधार ग्रहण कर इन्होंने नए युग का मुहावरा गढ़ा। इस दृष्टि से उनको आधुनिक नाटकों का आदि सूत्रधार कहा जा सकता है। भारतेन्दु के नाटक विविध विषयों से संबद्ध हैं – 'विद्यासुंदर' में प्रेमविवाह का मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। 'पाखण्ड बिड़म्बन' में मदिरा सेवन की प्रवृत्ति पर व्यंग्यात्मक शैली में भारतीय नारी की वीर भावना और पतिव्रत को उभारा गया है। 'अंधेर नगरी' में लोभवृत्ति और सत्ता–तंत्र पर कटाक्ष है, इस नाटक के पात्र घासीराम चूरुवाला तत्कालीन अवस्था को किस प्रकार अपने गाने में व्यक्त करता है, इसका पता निम्न पंक्तियों से चलता है –

'चूरन हाकिम सब जो खाते

सब पर दूना टिकस लगाते।

सारा हिंद हजम कर जाता।'

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

भारतेन्दुजी ने जहाँ हास्य व्यंग्यात्मक नाटक, कविता प्रहसन, निबंध लिखें बहीं व्यग्य से भरी हुई मुकरियों की भी रचना की है। 'नये जमाने की मुकरी' शीर्षक से इन्होंने समकालीन सामाजिक–राजनीतिक विसंगतियों को लेकर लिखी है।

उपयुक्त, बातों के अवलोकन के पश्चात हम इस तथ्य पर पहुँचते हैं कि हिन्दी के जन्मदाता और भारतीय नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु जी को जो सम्मान दिया गया, उसके वे हकदार अवश्य थे। इन्होंने देश समाज के हित में लेख लिखे, कविताएँ लिखीं, कहीं भाषण दिए, नाटक रचे और 'अभिनय' किया। विभिन्न बाधाओं के बावजूद वे अपने पथ से डिगे नहीं। वह खड़े रहे, अपनी प्रबल राष्ट्रनिष्ठा और सूदृढ़ इच्छा शक्ति के साथ। निश्चित रूप से भारतेन्दु युगविधायक साहित्यकार थे। इन्होंने अपने जीवनकाल में पराधीन, आक्रांत, भयभीत, राष्ट्र के दुःख और क्षोभ को प्रकट किया। हिन्दी भाषा ही नहीं हिन्दी साहित्य को भी नवीन राह दिखाई। उनके साहित्य में अगर रुदन है तो इसीलिए की जनसामान्य व्यथित था। खोझ है तो इसलिए की जनता असहाय थी। हुँकार है तो इसीलिए कि यही दशोद्धार का एकमात्र मार्ग था।

संदर्भ सूची :–

1. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पेपरबैकस, 1929 पृ. 246.
2. सिंह, ओमप्रकाश : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ग्रन्थावली, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, छठाँ संस्करण 2008, पृ. 447.
3. डॉ. नगेन्द्र (संपा.)/ डॉ. हरदयाल (सह संपा.) : हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स नोएडा – 201301, बयालीसवाँ पुनर्मुद्रण संस्करण – 2021, पृ. 445.
4. कुमार, डॉ. मनोज कुमार (संपा.) : भारतेन्दु कृत भारत दुर्दशा, पाण्डियन पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2013, पृ. 14. इंटरनेट, वेबचाइड, विभिन्न पत्रिकाएँ आदि।
5. इंटरनेट, वेवसाइड, विभिन्न पत्रिकाएँ आदि।